

मातृ-मंडल पुं. (तत्.) दोनो आँखों के बीच का स्थान।

मातृ-माता स्त्री. (तत्.) 1. माता की माता, नानी 2. दुर्गा।

मातृ-मुख वि. (तत्.) हर काम या बात में माता का मुँह ताकने वाला अर्थात् जड़मति, मूर्ख।

मातृ-रिष्ट पुं. (तत्.) ज्यो. फलित ज्योतिष के अनुसार एक दोष जिसके कारण प्रसव के उपरांत माता पर संकट आता या उसके प्राण जाने का भय होता है।

मातृ-वत्सल पुं. (तत्.) कार्तिकेय।

मातृ-शासित वि. (तत्.) माता के शासन में ही ठीक तरह से रहने वाला, अर्थात् मूर्ख।

मातृ-ष्वसा स्त्री. (तत्.) मौसी, माँ की बहन।

मातृष्वसेय पुं. (तत्.) मौसेरा भाई।

मातृ-सपत्नी स्त्री. (तत्.) सौतेली माता, विमाता।

मातृ-स्तन्य पुं. (तत्.) माँ का दूध।

मातृ-हत्या स्त्री. (तत्.) 1. माँ को मार डालना 2. माँ को मार डालने से लगने वाला पाप।

मात्र अव्य. (तत्.) इस, इन या इतने से अधिक या दूसरा नहीं जैसे- मात्र एक रुपया मुझे मिला है; मात्र 15 आदमी वहाँ पहुँचे सब चुप रहे; वहाँ मात्र बोलने वाले अधिकारी गण थे।

मात्रक पुं. (तत्.) 1. वह निश्चित मात्रा या मान जिसे एक मानकर उसी के हिसाब से या मेल से अन्य चीजों की संख्या निर्धारित की जाय, इकाई। यूनिट 2. किसी समूह की कोई एक वस्तु या अंग 3. वह जिसकी भिन्न या स्वतंत्र सत्ता हो।

मात्रा स्त्री. (तत्.) 1. लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई, गहराई, दूर, विस्तार, संख्या आदि जानने या निश्चित करने का परिमाण या साधन 2. कोई ऐसा मानक उपकरण या साधन जिससे कोई चीज तौली या नापी-जोखी जाती हो, परिमाण या माप जानने का साधन 3. किसी वस्तु का ठीक आयतन, तौल या नाप, परिमाण 4. किसी पूरी

पूरी या समूची इकाई का उतना अंश या भाग जितना अपेक्षित, आवश्यक या प्रस्तुत हो 5. औषध आदि का उतना अंश या परिमाण जितना एक बार में खाया जाता हो या खाया जाना अपेक्ष्य हो या उचित हो 6. किसी चीज का नियत या निश्चित छोटा भाग 7. उतना काल या समय जितना एक ह्रस्व अक्षर का उच्चारण करने में लगता है 8. उच्चारण, संगीत आदि में काल का उतना अंश जितना किसी विशिष्ट ध्वनि के उच्चारण में लगता है 9. बारह-खड़ी लिखने में वह स्तर सूचक चिह्न जो किसी अक्षर के ऊपर, नीचे या आगे-पीछे लगता है जैसे- ह्रस्व इ की मात्रा और दीर्घ ऊ की मात्रा 10. संगीत में उतना काल जितना एक स्वर के उच्चारण में लगता है 11. संगीत में ताल का नियत या निश्चित विभाग जैसे- तीन मात्राओं का ताल, चार मात्राओं का ताल 12. इंद्रिय, जिसके द्वारा विषयों का ज्ञान होता है 13. अंग, अवयव 14. किसी वस्तु का बहुत छोटा कण या अणु 15. आवृत्ति रूप 16. बल, शक्ति 17. राजाओं के वैभव के सूचक घोड़े, हाथी आदि परिच्छद 18. कान में पहनने का एक प्रकार का गहना।

मात्रा-वृत्त पुं. (तत्.) काव्य. मात्रिक छंद।

मात्रासम पुं. (तत्.) काव्य. एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ और अंत में गुरु होता है।

मात्रा-स्पर्श पुं. (तत्.) विषयों के साथ इंद्रियों का संयोग।

मात्रिक वि. (तत्.) 1. मात्रा-संबंधी 2. किसी एक इकाई से संबंध रखने वाला, एकात्मक (युनिटरी) काव्य. जिसमें मात्राओं की गणना या विचार होता है जैसे- मात्रिक छंद।

मात्रिक-छंद पुं. (तत्.) काव्य. वह छंद जिसके चरणों की गठन मात्राओं का ध्यान रख कर दी गई हो।

मात्सर वि. (तत्.) मत्सर युक्त।